26 / 06 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सितारों की दुनिया का अनुभव

➢➢ मैं जगमगाती हुई चैतन्य मणि हूँ..

➳_ ➳ चमकता हुआ सितारा हूँ..

➳_ ➳ मैं ज्ञान स्वरुप आत्मा हूँ...

➳_ ➳ ज्ञान सितारा हूँ...

➳_ ➳ सारे कल्प की हर आत्मा की जन्मपत्री की आधार मूर्त हूँ..

→ मैं हीरो पार्ट धारी हूँ...

→ श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ...

→ मैं पूर्वज हूँ..

→ विश्व की सभी आत्माओं की मैं पूर्वज हूँ..

- मैं त्रिकालदर्शी हूँ...
- मेरे इसी स्वरुप के यादगार में हद के सितारों के आधार पर जन्मपत्री देखते हैं...
- मैं हर आत्मा का भविष्य बनाने के निमित्त हूँ...
- मुक्ति और जीवन्मुक्ति के गेट..
- खोलने के निमित्त ज्ञान सूर्य बाप के साथ मैं ज्ञान सितारा भी निमित्त हूँ...

▸ मैं चैतन्य सितारा हूँ...

▸ अचल अडोल हूँ...

▸ श्रेष्ठ सेवाधारी हूँ...

▸ बाबा की स्नेही हूँ...

▸ सहयोगी आत्मा हूँ...

➢➢ ज्ञान सूर्य बाबा के मैं बिलकुल समीप हूँ..

➳_ ➳ उनसे सर्व शक्तियों की लाईट मुझे मिल रही है..

➳_ ➳ मैं आत्मा संगठन में भी सर्व की स्नेही बन रही हूँ...

➳_ ➳ सहयोगी बन रही हूँ...

→ मैं सदा चमकती हुई ज्योति हूँ..

→ मैं विश्व को रोशन करने वाला दिव्य सितारा हूँ...

→ मैं आत्मा त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित हूँ...

→ मैं स्वयम ही स्वयम का जज बनके चेक कर रही हूँ...

- मैं लक्की सितारा हूँ...
- सफलता का सितारा हूँ...

- या उम्मीदवार सितारा हूँ...
  - मैं अपने मीठे बाबा से रूहानी मिलन मना रही हूँ...
  - यह मिलन अति आनंद देने वाला है...
  - यह मिलन कल्प कल्प की नूंध है...

➢➢ मैं आत्मा ट्रस्टी हूँ...

- ➳_ ➳ सम्प्पूर्ण नश्तोमोहा हूँ..
- ➳_ ➳ मैं तन की...
- ➳_ ➳ धन की...
- ➳_ ➳ प्रवृत्ति की भी ट्रस्टी हूँ..
  - → मेरा किसी में भी मोह नहीं है...
  - → मेरापन नहीं है...
  - → साधनों को मैं सेवा अर्थ प्रयोग कर रही हूँ..
  - → मेरापन खत्म होने से मैं नश्तोमोहा बन रही हूँ...
  - → स्मृति स्वरुप बन रही हूँ..
    - सहज योगी बन रही हूँ...